

कोई तीर्थ मेरे मन को भाता नहीं

कोई तीर्थ मेरे मन को भाता नहीं,
खाटू वाले का जब से ये दर मिल गया
क्यों मैं भटकू याहा में इधर और उधर
श्याम प्यारे का सचा ये दर मिल गया
कोई तीर्थ मेरे मन को भाता नहीं,

मन के मंदिर में तुझको बिठा ही लिया
धडकनों में मेरी बस यही नाम है
माला जपने की मुझको जरूरत नहीं
सिर झुकाते ही जीवन का सुख मिल गया
श्याम जैसा कोई और दाता नहीं
खाटू वाले का जब से ये दर मिल गया
कोई तीर्थ मेरे मन को भाता नहीं,

चाहे मस्तक पे रोली लगे न लगे
इस की ज्योति का चन्दन लगा जब लिया
श्याम के रंग में अपने को रंग ही लिया
घर में खुशियों का देखो चमन खिल गया
रंग चड के उतर ये तो जाता नहीं
श्याम प्यारे का सचा ये दर मिल गया
कोई तीर्थ मेरे मन को भाता नहीं,

छोड़ दी सारी दुनिया इसी के लिए साथी मतलब का अब तक न कोई मिला,
आरजू मुझको जन्नत की है ही नहीं
जब से खाटू को देखा सकून मिल गया
रस्ता कोई नजर और आता नहीं,
श्याम प्यारे का सचा ये दर मिल गया
कोई तीर्थ मेरे मन को भाता नहीं,

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/20697/title/koi-tirth-mere-man-ko-baata-nhi>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |